SYNOPSIS

चित्रा मुद्गल और शकुंतला सिरोठिया के बालसाहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Analaytical Study of Chitra Mudgal and Shakunthala Sirotia's Children Literature

Submitted by

Sreevidia.P.V

18PHHIP001

Supervisor

Dr.G.Shanthi

Associate Professor, Department of Hindi

Submitted to

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women

Coimbatore — 641 043

February 2023

चित्रा मुद्गल और शकुंतला सिरोठिया के बालसाहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भारतीय परंपरा में शिशुओं के सर्वांगीण चारित्रिक विकास एवं संतुलित व्यक्तित्व निर्माण के लिए, विभिन्न संस्कारों की भावनाओं के साथ साहित्य का निर्माण भी किया जाता है। साहित्य के माध्यम से उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर एवं मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान किया गया है। रामायण, महाभारत, पुराण आदि इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बालक भावि समाज के अंग और निर्माता हैं। वास्तव में समाज का आरंभ बालक से ही होते हैं। शारीरिक और मानसिक रुप से स्वस्थ बच्चे, स्वस्थ समाज का निर्धारण करेंगे। ऐसे, बाल समाज के लिए जिस साहित्य की रचना होती हैं, उसे बाल साहित्य कहा जाता है।

शोध का उद्देश्य

❖ बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाल साहित्य के योगदान ।

❖ चित्रा मुद्गल और शकुंतला सिरोठिया के लेखन के आलोक में बाल साहित्य का विश्लेषण।

❖ दोनों लेखिकाओं के बाल साहित्य की तुलन।

साहित्यिक समीक्षा

- चित्रामुद्गल के साहित्य में सामाजिक चेतना अनुशीलन–सन्दीप कुमार, शोध निर्देशक योगेश कुमार, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय 2019
- चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन– शोधार्थी बारीआ सरोज बहन , एम शोध निर्देशक प्रवीण कुमार पी राठौड़ सौराष्ट्रा विश्वविद्यालय ,2019
- चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में परिवार और समाज का परिदृश्य शोधार्थी श्रीमती रेखा महेश्वरी शोध निर्देशक अनुसूया अग्रवाल पंडित रविशंकर शुक्ला विश्वविद्यालय 2016
- चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री अस्मिता–डोपनाथ जमुना, त्रिपुरा विश्वविद्यालय 2019

जहॉ तक मैंने देखा है, उपयुक्त विषयों पर ही शोध कार्य हुआ है। चित्रामुद्गल और शकुंतला सिरोठिया के बालसाहित्य पर अभी तक कोई शोध परक अध्ययन नहीं हुआ है। इसलिए जहॉ तक संभव है, मैंने इस विषय पर शोध अध्ययन करने का प्रयास किया है।

प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत

प्रेरणा :– एक मॉ होने के साथ–साथ मैं एक अध्यापिका भी हूँ। वर्तमान समाज में बच्चों का ध्यान तकनीकी की ओर ज्यादा आकृष्ट हो रहा है। ई–सिनेमा, ई–ग्राफिक्स, कार्टून आदि नव विकसित

माध्यम के बीच बालोपयोगी लिखित साहित्य का अमिट पहचान को सिद्ध करने हेतु, मैंने इस शोध विषय को चुना है।

सामग्री स्त्रोत

प्राथमिक स्त्रोत :— चित्रामुद्गल और शकुन्तला सिरोठिया के बालसाहित्य की संपूर्ण रचनाऍं एवं निजी अनुभव।

सहायक स्त्रोत :— पत्र—पत्रिकाऍं, सहायक ग्रन्थ एवं वेबसाइट

इस विषय पर गहराई से अध्ययन करने के लिए इस शोध कार्य को पॉच अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय – बाल साहित्य का उद्भव एंव विकास

बाल साहित्य, साहित्यकारों द्वारा बच्चों को केंद्र में रखकर लिखा गया साहित्य है। बाल साहित्य एक महत्वपूर्ण विधा है। अच्छे और उपयोगि संस्कार देनेवाले, ज्ञानवर्द्धक, बाल मनोविज्ञान तथा मनोरंजन पर आधारित यह साहित्य अपनी अलग पहचान रखता है। प्राचीनकाल में बालसाहित्य का तात्पर्य बच्चों को शिक्षा, उपदेश, आदर्श आदि के साथ नीति एवं संस्कृति का परिचय देना है। युग और समाज के परिवर्तन के साथ साथ बालसाहित्य की परिभाषा में भी परिवर्तन होता गया, उसके मूल्य बदलते गये। बालसाहित्य की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती हैं। बालक अपनी रुचि के अनुकूल स्वयं ही अपने साहित्य का निर्णय करते हैं। पारिवारिक वातावरण, विद्यालय और बच्चों को पढ़ने के लिए प्रमुख भूमिका निभाने वाले तत्व है।

प्रथम अध्याय में निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है :-

- बाल साहित्य का अर्थ, स्वरूप और परिभाषा।
- बाल साहित्य का महत्व
- हिन्दी बालसाहित्य का इतिहास – स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर
- हिन्दी बाल साहित्य की विविध विधाओं का संक्षिप्त विवरण
- बाल मनोविज्ञान और बाल साहित्य

बाल साहित्य के संदर्भ में बाल मनोविज्ञान का विस्तार से अध्ययन किया गया है। बाल मनोविज्ञान पर आधारित बाल साहित्य उच्च कोटी का माना जाता है। बाल मनोविज्ञान से तात्पर्य बालमन के अध्ययन से है। बालमनोविज्ञान बालक के मानसिक और शारीरिक दोनों के ही विकास का अध्ययन है। विकास की यह प्रक्रिया विभिन्न मानसिक और शारीरिक परिवर्तनों के फलस्वरूप होती है।

बालक जन्म लेते समय उनके क्रियाकलाप चेतन मन पर आधारित होते है। बालक में मुख्य रूप से भय, प्रेम और क्रोध के संवेग होते हैं जो बालसाहित्य के अंतर्गत आता है ।

द्वितीय अध्याय – चित्रा मुद्‌गल और शकुंतला सिरोठिया का व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

इस अध्याय में चित्रा मुद्‌गल और शकुंतला सिरोठिया के व्यक्तित्व एवं उनके समग्र साहित्य का विवरणात्मक अध्ययन किया गया है। चित्रा मुद्‌गल और शकुंतला सिरोठिया दोनों हिंदी साहित्य जगत के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। चित्रा जी के बाल साहित्य में बालक की मासूमियत, बालक का मनोविज्ञान आदि चित्रित है। जब साहित्य में बाल साहित्य की बहुत आवश्यकता पड़ी उसी समय में शकुंतला सिरोठिया ने बाल साहित्य लेखन, आरंभ किया था।

चित्रा मुद्‌गल की रचनाएँ :–

- **कहानी संग्रह :–**

  मामला आगे बढेगा अभीं, जिनावर, लपटें, केंचुली, भूख, बयान, ताशमहल, जहर ठहरा हुआ, लाक्षागृह, अपनी वापसी, इस हमाम में, ग्यारह लंबी कहानियॉ, जगदम्बा बाबु गॉव आ रहे हैं, चर्चित कहानियॉ।

- **उपन्यास :–**

  एक जमीन अपनी, आवॉ, गिलिगडु, पोस्ट बॉक्स न. नाला सोपारा।

- **बालकहानी संग्रह :–**

  दूर के ढोल, नीतिकथाएँ, देश–देश की लोककथएँ, चित्रामुदृगल की चुनीन्दी कहानियॅा।

- **बालउपन्यास :–**

  माधवी–कन्नगी, मणिमेखलै, जीवक चिन्तामणि।

शकुंतला सिरोठिया की रचनाएँ :–

- **बालकहानी संग्रह :–**

  शेरू की वीरता, नीना की भेंट, बालक नेपोलियन की डायरी, चिडियों की सौगात टिक्कू ने चलने सीखा, बेला चली घूमने। ।

- **बालपद्‌य कथा :–**

  गीतों भरी कहानियॉ, बिल्ली रानी, तीन भालू, राणा रणजीत सिंह, दुलहिन चुहिया दुल्हा बिल्ला, शेर और बकरी, भोला और शेरा।

- **बालउपन्यास :–**

  गंधराज, छोटा मुसाफिर लम्बा सफर, जंगली जानवरों के बीच अकेली लड़की, दादी के घर दीपावली, साहसी रेशमा।

- **बालनाटक**

  शिशुनागर, वर्षा पति का दरबार, चतुर ओडीसस, स्वतंत्रता के वथ पर।

- **बालगीत :–**

  गाले मुन्ना, चमकील फूल, नन्हों का संसार, 101 बाल गीत संग्रह गुडिया बनी दुल्हनियॉ, गीत तुम्हारे ।

- **लोरियॉ**

  आ री निंदिया, सो अओ सुख निंदिया, निंदिया का पालना निंदिया थम थम ,नन्ही चिड़िया । सोनचिरैया, पंछी गीत,।

- **किशोरगीत :–**

  कॉटों में फूल, काले मेघा पानी दे, जाग पहरुए, मॉ मुझको आवाज लगाना।

- **प्रौढ़ साहित्य :–**

  दीप, सुधि के स्वर, चॉद इतना हॅसा, हिन्दी काव्य में नारी की देन मोतीलाल नेहरू, सारंग सदावृज, शिशुकला शिक्षण, अंश अंश अभिव्यक्ति, हंस रे बाबरे, मेरे परदेशी दर्द का दर्पण, आत्मीयता के संदर्भ।

तृतीय अध्याय – चित्रामुद्गल का बाल साहित्य – एक अवलोकन

आधुनिक हिन्दी कथासाहित्य की लेखिका चित्रामुद्गल स्नेह, प्रेम, करूणा जैसे मानवीय गुणों का भण्डार है। वे विद्रोही व्यक्तित्व की स्वामिनी है और सच को सच कहने की हिम्मत रखती है। इसके अलावा कथनी और करनी में भी समरूपता रखनेवाली प्रखर चेतना की संवाहिका है। हिन्दी कहानी साहित्य में उनका योगदान अद्वितीय है। उन्होंने अपने बचपन से लेकर अब तक के अपने कटु अनुभवों को साहित्य में सकारात्मक दृष्टि और रचनात्मक ताकत में व्यक्त किया है। बाल साहित्यकार के रूप में चित्रा मुदगल के योगदान सराहनीय है। नए और पुराने दोनों विषयों का उचित सामंजस्य करते हुए सामाजिक सरोकारों से युक्त अनेक प्रकार की कहानियाँ उन्होंने लिखा हैं। आप की कहानियाँ बाल जीवन के अध्ययन, निरीक्षण और खुद अपने बाल जीवन के विगत स्मृतियों के आधार से भरपूर है। कथा साहित्य में देश भक्ति, सांस्कृतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सदाचार आदि बालकों को सहज रूप से सीखने को मिलता है।

चतुर्थ अध्याय –शकुन्तला सिरोठिया का बालसाहित्य – एक अवलोकन

बाल साहित्य जगत में शकुन्तला जी का योगदान अद्वितीय है। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं , बाल – कहानी, उपन्यास, नाटक, लोरियॉ, गीत ,लोककथाएँ, लोरियॉ, पंछीगीत, किशोर गीत। शिशु से लेकर किशोरों तक को उन्होंने अपने अन्तर्मन में उतारा, उनसे तादात्म्य स्थापित किया और अपने व्यक्तित्व का एक अंश बनाया। यही शकुन्तला जी की सफलता का मर्म और रहस्य है। उन्होंने कई तरह की जीवन जिया है, जैसे – मॉ, गृहिणी, शिशुओं की अध्यापिका, गायिका, संवेदनशील भावनामयी लेखिका। इन रूपों के प्रतिबिंब का झलक उनके बाल साहित्य में विद्‌यमान हैं।

पंचम अध्याय – चित्रा मुदगल और शकुंतला सिरोठिया के बाल साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

तुलनात्मक अध्ययन एक ऐसा अध्ययन है जो विभिन्न साहित्य एवं रचनाओं के बीच समानता और असमानता पर केंद्रित होता है। प्रस्तुत अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन का परिचय एवं महत्व के साथ चित्रा मुद्‌गल और शकुंतला सिरोठिया के बाल साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही दोनों महानुभावों के बाल साहित्य की समानता और असमानता को प्रस्तुत किया गया है।

निम्न बिन्दुओं पर दोनों लेखिकाओं की समानता को हम देख सकते हैं –

समानता

- ❖ पशु–पक्षि संबन्धित कहानियॉ
- ❖ नीतिकथाएॅ
- ❖ लोककथाएॅ
- ❖ पौराणिक कथाएॅ
- ❖ बालमनोविज्ञान
- ❖ भाषा शैली

निम्न बिन्दुओं पर दोनों लेखिकाओं की असमानता को हम देख सकते हैं –

असमानता

- ❖ अवस्था
- ❖ अन्य साहित्य

दोनों लेखिकाओं ने प्राचीन, पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक चरित्रों के माध्यम से बालकों को नैतिक विकास के लिए उपदेश दिया है। बच्चों में देश भक्ति के साथ मानवतावाद, सांस्कृतिक, धार्मिक,

सामाजिक, पारिवारिक मूल्यों के महत्व को समझाने की कोशिश की है। दोनों लेखिकाओं ने बालकों को ज्ञान वर्धन बनाने हेतु भारतीय साहित्य से भी परिचित कराया है।

उपसंहार

साहित्य समाज का दर्पण है। हिंदी साहित्य का क्षेत्र विशाल और विविधता से भरा हुआ है। साहित्य का सामाजिक मूल्यों से तथा जीवन से किसी न किसी रूप में घनिष्ठ संबंध रहता है। पाठकों के आयु वर्ग और उनकी रुचि के आधार पर साहित्य का वर्गीकरण – प्रौढसाहित्य, बाल साहित्य, महिला साहित्य, विज्ञान साहित्य, लोक साहित्य आदि में वर्गीकृत किया जा सकता है। इस कोटि में बाल साहित्य एक ऐसे महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें बालकों की रुचि, कल्पना, बौद्धिक क्षमता, परिवेश, मानसिकता आदि को केंद्र में रखकर रचना की जाती है।

हिंदी में बाल साहित्य का महत्व सामान्य साहित्य के समान ही है। बाल साहित्य की एक समृद्ध परंपरा है। प्राचीन काल से कथा साहित्य मौखिक रूप से विश्व भर में जनता तक पहूँचते थे। पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथा, एवं अकबर बीरबल की कहानियाँ इसमें प्रसिद्ध हैं। भारतेंदु युग नई और पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं का सन्धि युग था। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के समकालीन साहित्यकार भी इसमें योगदान देते रहे। बालक के व्यक्तित्व एवं सुदृढ चरित्र का निर्माण, जीवनी साहित्य के माध्यम से करने का कार्य द्विवेदी युग में आरंभ हो चुका था। द्विवेदी युग के बाद हिंदी बाल साहित्य में राष्ट्रीय जागरण का स्वर मुखरित हो गया। वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति भी इस समय बाल साहित्य में प्रविष्ट हुई। स्वातंर्त्योत्तर युग में बाल साहित्य की सभी विधाओं में राष्ट्रीयता की भावना का सफल प्रतिपादन हुआ है।

चित्रा मुद्गल जी तमिल साहित्य के महाकाव्य को हिंदी में अनूदित करके बाल पाठकों के लिए उपन्यास का सृजन दिया है। शकुन्तला जी ने लोरियों द्वारा बालकों को सदुपदेश दिया है और उन्होंने शैशवावस्था से लेकर किशोरावस्था तक के बच्चों के लिए बाल साहित्य का निर्माण किया है। इन असमानता में भी व्यक्ति विशेष के महत्व को हम देख सकते हैं, जहॉ आधुनिक संदर्भ में बाल साहित्य की आवश्यकता को उजागर किया गया है।

चित्रामुद्गल और शकुन्तला सिरोठिया की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद इस तथ्य पर पहूँचते हैं कि दोनों लेखिकाएँ बाल साहित्य की रचना में सफल हुए है। बच्चों के प्रति अपनी विचारधारा को प्रस्तुत करने में दोनों सिद्धहस्त हुए हैं। बालपाठकों को आकर्षित करने में अद्वितीय क्षमता इनमें हैं। चित्रामुद्गल के कथासाहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के साथ वर्तमान जीवन और उसके परिवेश की झॉकी भी देखने को मिलता है। चित्रामुद्गल की कहानियों की स्वाभाविकता

इसमें है कि बाल जीवन के अध्ययन, नीरीक्षण और अपने बाल जीवन की विगत स्मृतियों का ताज़ापन है। यह उल्लेखनीय बात है कि हिन्दी में बहुत से बालसाहित्यकार हुए हैं, जिनमें बालसाहित्य के सभी विधाओं को स्पर्श करके बालसाहित्य को संपन्न बनाने का काम शकुन्तला सिरोठिया ने ही किया है। विशेष रूप से आलोच्य लेखिकाओं ने पशु–पक्षियों को पात्र बनाकर बालकथाएँ लिखी हैं।

लेखिकाओं ने प्रजातंत्र जैसे महत्वपूर्ण विषय को सरल, सहज और रोचक तरीके से समझा दिया है। देश–देश की लोककथाओं की रचना करके बच्चों को तत्कालीन संस्कृतिक, सामाजिक समाज विशेष का परिचय दिया है। नैतिक शिक्षा का बोध कराने के लिए उन्होनें नैतिक शिक्षा संबन्धी कहानियों की रचना भी की है। दोनों लेखिकाओं की भाषा सम्बन्धी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, हम यह निष्कर्ष पर पहूँच सकते है कि बालसाहित्य की रचना में सहज और स्वाभाविक भाषा के साथ मुहावरे और लोकोक्तियों का बहुत सटीक, सफल प्रयोग, सरलता, प्रवाहमयता आदि की अभिव्यक्ति में सक्षम हुआ है। लोकोक्तियों पर आधारित कहानियों में उस लोकोक्ति के सच को दिखाने का भरसक प्रयास रहा है। चित्रा जी अपनी कहानियों में, कथ्य के माध्यम से बडों को भी शिक्षित करने का प्रयास किया है। विशेषकर किशोरावस्था में पहॅचनेवाले बच्चों के सम्मान का भी ध्यान रखना आवश्यक माना है। उनकी नीतिकथाओं को पढकर बालक बिना किसी उपदेश के सही मार्ग पर चलने केलिए प्रेरित होते है। ये सब चित्राजी की लेखनी का चमत्कार है।

स्कूलों में भी नैतिक विज्ञान की कक्षा नहीं होते , जहॉ उनको नीतिपरक शिक्षा मिलती थी। आजकल बच्चे बाल साहित्य पढ़ने के लिए उतना चाव नहीं रखते हैं, जितना पुराने जमाने के बच्चे रखते थे। आजकल संयुक्त परिवार नष्ट हो गया है। पति पत्नी और बच्चों का अणु परिवार ही आज दृ ष्टिगत होता है। ऊपर से पति–पत्नी नौकरी करते हैं तो बच्चों के लिए समय दोनों के पास नहीं होते, बच्चे एकाकीपन से जूझते हैं। पहले की तरह बच्चे खेल के मैदान में नहीं ट्यूशन के भारी बोझ से या फिर टेलिविजन के सामने बैठकर एकरस कार्यक्रम देखने के लिए विवश हो जाते हैं। विदेशी वीडियो गेम की सी डी के अलावा उनके साथ रहने के लिए, उनके पास समय नहीं है। आजकल के बच्चे किताबों की दुनिया से, ई सिनेमा, ई ग्राफिक्स ,डिजाइनिंग, कार्टून आदि नवविकसित विधाओं के विद्याओं में लीन है। इस तकनीकी युग में बालक उपकरणों के बीच अपना जीवन यापन करने लगा और स्क्रीन एडिक्शन हो गया है। किताबों की दुनिया या पुस्तकालय उसके बहुत दूर पर हैं।

पुराने जमाने की संयुक्त परिवार में रहने वाला बच्चा पहले माँ की लोरीयों से लेकर दादी–नानी की कहानियाँ सुनकर किताबों की दुनिया में आए थे। आजकल बच्चों को साहित्य या किताबों की दुनिया में आकर्षण होना चाहिए, तभी तो बाल साहित्य के उद्देश्य की पूर्ती हो सकती है।

बच्चे बड़ों का अनुकरण बड़ी शीघ्रता से करते हैं। इसलिए बड़ों को भी साहित्य के पठन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए जिस प्रकार बच्चे माता–पिता को टी.वी देखते या रेडियो सुनते देखकर स्वयं भी वैसा करना शुरू कर देते हैं, उसी प्रकार हमारे नीतिपरक ग्रन्थ, काव्य, आदि पढते देखकर बच्चों के मन में भी उन्हीं पुस्तकें पढ़ने का शौक पैदा होना चाहिए। देश के विकास और भविष्य बालकों पर निर्भर है। इसलिए बालकों की मानसिक वृद्धि हेतु हमें उन्हें पुस्तकों की दुनिया में एक हद तक मिलाने का प्रयास करना चाहिए।

जितनी भी हो सके शोध की सीमा को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है। परंतु यह शोध कार्य अपने आप में पूर्ण ही होता है, ऐसा नहीं है। यह विषय ''चित्रा मुद्गल और शकुंतला सिरोठिया के बाल साहित्य का विश्लेषणात्मक अद्ययन'' इतना विस्तार है कि इस पर और भी शोध कार्य होने की संभावनाएँ है – मेरे विचार से निम्नलिखित शीर्षकों पर शोध कार्य हो सकता है।

- चित्रा मुद्गल के बाल साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद।
- शकुंतला सिरोठिया के बाल साहित्य को अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद।
- चित्रा मुद्गल और शकुंतला सिरोठिया के बाल साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं के बालसाहित्य के साथ तुलना।
- चित्रा मुद्गल और शकुंतला सिरोठिया के बालसाहित्य का मीडिया रूपांतरण।

सन्दर्भ ग्रन्थ

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक	प्रकाशक
1	डॉक्टर ओम प्रकाश सिंहल	हिंदी बाल साहित्य परंपरा और प्रयोग	अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण 1992
2	डॉ परशुराम शुक्ल	हिंदी बाल साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन	आराधना ब्रदर्स ,कानपुर –प्रथम संस्करण 2016
3	जय जयराम आनंद	बाल समस्याएँ :कारण और निदान	आराधना ब्रदस,कानपुर– प्रथम संस्करण 2014
4	उषा यादव राजकिशोर सिंह	हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श	सामयिक प्रकाशन,नईदिल्ली–प्रथम संस्करण 2014
5	डॉ रमाशंकर आर्य	हिंदी बाल साहित्य में मनोरंजन एवं नैतिकता	आराधना ब्रदर्स ,कानपुर –द्वितीय संस्करण 2016
6	डॉ सरोजिनी पांडे	बाल साहित्य :समीक्षा के प्रतिमान और इतिहास –लेखन	आशीष प्रकाशन, कानपुर – प्रथम संस्करण 2011
7	डॉ श्री प्रसाद	हिंदी साहित्य की रूपरेखा	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद – प्रथम संस्करण 2007
8	डॉ शकुंतला कालरा	बाल साहित्य का स्वरूप और रचना संसार	भावना प्रकाशन, दिल्ली – प्रथम संस्करण 2002
9	डॉ सरोजिनी पांडे	हिंदी साहित्य का इतिहासः लेखन ऋपुनर्लेखन	ग्रन्थम प्रकाशन, कानपुर – प्रथम संस्करण2003
10	डॉ श्री प्रसाद	बाल साहित्य की अवधारणा	उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ – प्रथम संस्करण 1998
11	डॉ हरिकृष्ण देवसरे	बाल साहित्य,:मेरा चिंतन	मेधा बुक्स, दिल्ली – द्वितीय संस्करण 2002
12	डॉ शकुंतला कालरा रचना कुमार	बाल साहित्य के युग निर्माता जयप्रकाश भारती	भावना प्रकाशन, दिल्ली – प्रथम संस्करण 2009
13	निरंकार देव सेवक	बालगीत साहित्य : इतिहास एवं समीक्षा	उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ – प्रथम संस्करण 1983
14	प्रकाश मनु	हिंदी बाल कविता का इतिहास	मेधा बुक्स, दिल्ली –प्रथम संस्करण 2003
15	डॉ जयप्रकाश भारती	हिंदी के श्रेष्ठ बाल गीत	पराग प्रकाशन, दिल्ली – प्रथम संस्करण 1987
16	डॉ कृष्ण चंद्र तिवारी 'राष्ट्र बंधु	मनोरंजक बाल कविताए	आकाशगंगा पब्लिकेशन दिल्ली प्रथम संस्करण 2008
17	डॉ गिरिराज शरण अग्रवाल	बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक	हिंदी साहित्य निकेतन ,बिजनौर प्रथम संस्करण 2000
18	डॉ विजयलक्ष्मी सिन्हा	आधुनिक हिंदी में बाल साहित्य का विकास	साहित्य वाणी, इलाहाबाद – प्रथम संस्करण 1986
19	डॉ कुसुम डोभाल	हिंदी बाल काव्य में प्रतीक एवं कल्पना तत्व	लाइब्रेरी बुक सेंटर प्रथम संस्करण 1990

20	लालाजी राम शुक्ल	बाल मनोविज्ञान	नागरी प्रचारिणी सभा काशी प्रथम संस्करण 2003
21	श्री गजदानंद पांडेय	असामान्य मनोविज्ञान	वृंदा माला कार्यालय, पटना 1953
22	लालजी राम शुक्ल	बाल मनोविकास	नंदकिशोर एंड ब्रदर्स, बनारस 1941
23	डॉ सरयू प्रसाद चौब	बाल व्यवहार विकास	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1953
24	डॉ श्रीजा.टी.कृष्णन	महिला लेखन का सामाजिक संदर्भ	गोविंद पचौरी जवाहर पुस्तकालय प्रथम संस्करण 2016
25	जयप्रकाश भारती	भारतीय बाल साहित्य का इतिहास	अखिल भारती प्रकाशन प्रथम संस्करण 2002
26	डॉ भ.ह. राजूरकर डॉ राजमल बोरा	तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप और समस्या	वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण,
27	डॉअपर्णा कुचेकर	महिला उपन्यासकारों के हिंदी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	दिव्या डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशक ,प्रथम संस्करण2016
28	डॉ करुणा शर्मा	बाल साहित्यकार चित्रा मुद्‌गल बाल संसार समग्र	विजय प्रकाश बेरी प्रकाश 2004
29	डॉ मनोज कुमार	हिंदी बाल का विकास मनोवैज्ञानिक अध्ययन	आशा प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण 2017
30	डॉ चित्रा वारेरकर	बाल मनोविज्ञान :बाल मन की जिज्ञासा	आरोग्य विधि प्रकाशन ,प्रथम संस्करण 2006
31	चित्रा मुद्‌गल	जंगल का राज	प्रभात प्रकाशन1986
32	चित्रा मुद्‌गल	देश देश की लोक कथाएं	प्रभात प्रकाशन ,1980
33	चित्रा मुद्‌गल	नीति कथाएँ	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली 1980
34	चित्रा मुद्‌गल	पेड़ पर खरगोश	किताब घर ,नई दिल्ली 2003
35	चित्रा मुद्‌गल	सूझ बूझ	राजपाल एंड संस दिल्ली द्वितीय संस्करण 2014
36	चित्रा मुद्‌गल	कांच की किरच	राजपाल एंड संस ,द्वितीय संस्करण 2008
37	चित्रा मुद्‌गल	दूर के ढोल	किताबघर प्रकाशन ,नई दिल्ली ,(2013)
38	चित्रा मुद्‌गल	चित्रा मुद्‌गल की चुनिंदा बाल कहानियां	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत (2017,2018)
39	चित्रा मुद्‌गल	माधवी–कन्नगी	किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली (2009,)

40	चित्रा मुद्गल	मणिमेखलै	मेघालय साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली (2002)
41	चित्रा मुद्गल	जीवक	साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली (2001)
42	चित्रा मुद्गल	जंगल का राज	प्रभात प्रकाशन , नई दिल्ली (1986)
43	चित्रा मुद्गल	जंगल	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत प्रथम संस्करण2010
44	डॉ करुणा शर्मा	,बाल साहित्यकार चित्रा मुद्गल	,एपीएन पब्लिकेशन ,नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण 2022
45	शकुंतला सिरोठिया	मां मुझको आवास लगाना	अनुभूति प्रकाशन, कानपुर ,संस्करण 2007.
46	शकुंतला सिरोठिया	पंछी गीत,	लहर प्रकाशक इलाहाबाद प्रथम संस्करण 2009
47	शकुंतला सिरोठिया	निंदिया का पालना	अचिंत्या पब्लिकेशन्स,इलाहाबाद द्वितीय संस्करण2006
48	शकुंतला सिरोठिया	नन्नू का संसार	लहर प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1990
49	शकुंतला सिरोठिया	सिद्धार्थ और शुद्धोधन	जन चेतना प्रकाशन ,इलाहाबाद , संस्करण2009

S.No	Website
1.	https://www.bhartiyasahityas.com ›
2.	https://dyuthi.cusat.ac.in › purl › Dyuthi-T1884
3.	https://core.ac.uk›
4.	https://www.aajtak.in › story › chitra-...
5.	https://www.jakhira.com
6.	https://www.shramjeevijournalist.com › ...
7.	https://hi.wikipedia.org › wiki ›
8.	https://bengaluru.citizenmatters.in › Society
9.	https://www.hindikul.com › bal-man.
10.	https://sstmaster.com